IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सु–न्जू : विश्लेषणात्मक समीक्षा

(SUN TZU)

डॉ0 राकेश कुमार
असि0 प्रोफेसर
आचार्य नरेन्द्रदेव किसान पी0जी0 कॉलेज
बभनान गोण्डा

जीवन परिचय :–

सु–न्जू का जन्म ईसा पूर्व पांचवी शताब्दी में चीन में हुआ था। वे विख्यात सैन्य विचारक एवं सेनापति थे। वे ''दी आर्ट ऑफ वार'' पुस्तक के रचयिता थे। जो छोटे–छोटे तेरह अध्यायों में विभक्त है। इस पुस्तक का प्रत्येक अध्याय युद्ध के एक पहलू को समर्पित है। इस पुस्तक को दुनियाभर के सैन्य कमांडरो और जनरलो को प्रभावित किया है। और साथ ही इसका प्रभाव राजनीति, खेल और व्यापार पर भी पड़ा है।

युद्ध के बारे में सु–न्जू के विचार :–

सु–न्जू कहते हैं कि "युद्ध राज्य का महान कार्य है। जीवन और मृत्यु का क्षेत्र है। अस्तित्व और विनाश का मार्ग है जिसका अध्ययन अधिक परिश्रम के साथ किया जाना चाहिए।[1] योजना बनाने और सैन्य अभियानों के संचालन हेतु युद्ध में सैनिकों की नैतिक एवं बौद्धिक क्षमताएं निर्णायक होती हैं और यदि इन्हें युद्ध में उचित रूप से इस्तेमाल (उपयोग किया जाए तो युद्ध में सफलता प्राप्त की जा सकती हैं। युद्ध में शत्रु सेना को अलग–अलग करने और उनके मनोबल को ध्वस्त करने में मुख्य रूप से बल दिया जाना चाहिए। ऐसा करने से शत्रु सेना के प्रतिरोध को तोड़ा जा सकता है और उसके राज्य को उखाड़ फेंका जा सकता है इस तरह बिना संघर्ष किए ही शत्रु सेना को जीतकर उसके शहरों पर कब्जा किया जा सकता है।

1. योजना का निर्धारण करना :–

सु–न्जू के अनुसार युद्ध के सम्बंध में विस्तृत योजना बनाते समय पाँच तत्वों पर ध्यान देना चाहिए क्योंकि इन्हीं पर युद्ध में विजय निर्भर करती है। ये तत्व निम्नलिखित हैं–[2]

1. नैतिक नियम 2. स्वर्ग 3. पृथ्वी 4. कमांडर (सेनापति)

5. विधि और अनुशासन

1. **नैतिक नियम :–** नैतिक नियम लोगों के लिए अपने शासक का साथ देने के कारण बनते हैं जिससे कि वे अपने जीवन की परवाह किए बिना, बिना किसी डर के उसका अनुगमन करें।
2. **स्वर्ग :–** दिन और रात, सर्दी व गर्मी, काल और ऋतुओ को इंगित करता है।
3. **पृथ्वी :–** दूरी (कम या ज्यादा), सुरक्षा व खतरा, खुला और तंग स्थान और जीवन और मृत्यु।
4. **सेनापति :–** में ज्ञान, बुद्धिमता, शौर्य, दया, सहनशीलता ये पांच चीजें होनी चाहिए।
5. **विधि व अनुशासन :–** इसके अंतर्गत सेना को उपखंडों में समुचित तरह से क्रमबद्ध करें, मार्गो का रख रखाव करना जिससे रसद सेना के पास सुगमता से पहुंच सकें और सेना के खर्च पर नियंत्रण रखना आदि। ये वे मद है जिन्हें किसी भी सेनानायक को जानना चाहिए, जो इन्हें जानता है वही जीतता है। जो नहीं जानता है वह हार जाता है।

सु–न्जू ने कहा कि सभी तरह के युद्धकर्म छल पर आधारित होने चाहिए, उन्होंने सभी युद्धकर्मों को कपट के रूप में ही लिया है। अतः जब हम हमला करने को तैयार हो तो हमें असमर्थ लगना चाहिए। जबकि अपनी ताकत का इस्तेमाल करना है तो उन्हें हमें निष्क्रिय दिखाना चाहिए। जब हम पास हो तो हमें शत्रु को यह विश्वास दिलाना चाहिए कि हम दूर हैं और जब हम दूर हो तो दुश्मन को पास होने का विश्वास दिलाना चाहिए। शत्रु के संगठित शक्ति को विभाजित कर देना चाहिए, युद्ध में शत्रु सेना को अलग अलग करने और उसके मनोबल को ध्वस्त करने में प्रमुख बल दिया जाना चाहिए। ऐसा करके शत्रु सेना के प्रतिरोध को तोड़ा जा सकता है और उसके राज्य को उखाड़ फेंका जा सकता है इस तरह बिना संघर्ष किए ही शत्रु सेना को जीतकर उसके शहरों पर कब्जा किया जा सकता है।

सेनाध्यक्ष का मुख्य लक्ष्य शत्रु सेना के सेनाध्यक्ष जो कि सेना का मस्तिष्क होता है पर प्रथम प्रहार करना चाहिए। इसी कारण सु–न्जू ने शत्रु के मस्तिष्क पद पर हमला करने को युद्ध की एक प्राथमिक आवश्यक शर्त के रूप में माना है। इसके साथ ही वे कहते हैं कि यदि आपका प्रतिद्वंदी गुस्से वाला है तो

उसे परेशान करें (वर्तमान समय में खेलों में यह प्रयोग होने लगा है) कमजोर होने का नाटक करें कि वह छटपटाकर कोई गलती करें और उसकी गलती से फायदा उठाओ।[3] उनका प्रसिद्ध कथन–

जब वह आराम चाहता हो तो उसे आराम मत करने दो।

यदि शत्रु शक्तिशाली हो तो उसके साथ युद्ध नहीं करना चाहिए।

शत्रु पर वहां हमला करें जहां उसने सोचा भी ना हो और उसने कोई तैयारी ना की हो। इसके साथ ही सेनाध्यक्ष को अपनी सेनाओं को लगाने की जानकारी को अंत तक छुपाए रखना चाहिए।

सु–न्जू लंबे समय तक चलने वाले युद्ध को सही नहीं मानते वे कहते हैं कियुद्ध में विजय प्राप्त करना लक्ष्य होना चाहिए ना कि लंबे अभियान चलाना। वे कहते हैं कि लंबे अभियान से आप के आर्थिक साधन खत्म होंगे और आपके सैनिक थकेंगे और उनके हथियारों को जंग लगेगा और आपकी ताकत कमजोर होगी इसलिए 'युद्ध' को समुचित तैयारी किए बिना युद्ध प्रारंभ कर देना मूर्खता है। परंतु अधिक समय तक तैयारी करते रहना भी बुद्धिमानी नहीं है। इसलिए युद्ध को सोच समझकर ही लड़ना चाहिए।

सु–न्जू के अनुसार युद्ध कला का ध्येय शत्रु को नष्ट करना नहीं होता वरन उसके देश पर अधिकार करना होता है। शत्रु सेना को नष्ट करने की तुलना में उसको बंदी बनाना ज्यादा लाभदायक होता है। शत्रु को बिना लड़े ही पराजित करना सैनिकों की लड़ने में निपुणता पर निर्भर करता है। सु–न्जू के अनुसार युद्ध में विजय के लिए पांच बातों का जानना आवश्यक है–

क – वह जीत जाएगा जो जानता है कि कब लड़ना है और कब नहीं

ख– कमजोर और श्रेष्ठ सेना पर समान रूप से नियंत्रण रखना है।

ग– सेना में मनोबल सेना में बराबरी का भाव को बनाए रखना है।

घ– युद्ध की पूरी तैयारी करने एवं शत्रु को असावधान करने की ताक में रहे

ड़– सैन्य श्रेष्ठता वाली सेना की ही विजय होती है।

इसी संदर्भ में कहा गया है कि यदि आप दुश्मन को जानते हैं और खुद को जानते हैं तो आपको सौ लड़ाई के परिणाम से डरने की आवश्यकता नहीं है यदि आप खुद को जानते हैं परंतु दुश्मन को नहीं जानते तो विजय के साथ पराजय भी मिल सकती है और यदि आप ना तो खुद को जानते हैं और ना दुश्मन को तोयुद्ध में पराजय ही मिलेगी।

सामरिक फैलाव :–

सु–न्जू ने सुरक्षात्मक और आक्रमणात्मक दोनों प्रकार की कार्यवाही पर प्रकाश डाला है सुरक्षात्मक युद्ध से पराजय टाली जा सकती है परंतु विजय के लिए आक्रमणात्मक कार्यवाही जरूरी है।

सु–न्जू के अनुसार चाहे सेना बड़ी हो या छोटी सभी के संगठन और नियंत्रण के सामान नियम हैं सभी प्रकार के लड़ाईयों में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष दोनों प्रकार के उपाय आवश्यक है। सभी युद्धों में परोक्ष तरीके का प्रयोग लड़ाई से जुड़ने के लिए परंतु उपरोक्त तरीकों को जीत को सुनिश्चित करने के लिए जरूरी होती है।

युद्ध में आक्रमण की प्रत्यक्ष और परोक्ष विधियों युक्तिचालों की अन्तहीन श्रंखला को जन्म देती है। चतुर योद्धा संग्रहीत होती तकतों को प्रभाव देता देखता है। उसकी योग्यता सही आदमियों को चुनना है और संग्रहित हुई ताकतों का उपयोग करना है।[4]

सु–न्जू के अनुसार जो पहले रणभूमि में पहुंचता है और शत्रु की प्रतीक्षा करता है वह संग्राम के लिए तैयार है। परंतु जो रणभूमि में बाद में आता है उसे संग्राम हेतु शीघ्रता करनी पड़ती है। क्योंकि वह थका हुआ होता है। इसी कारण सु–न्जू कहते हैं कि जो युद्ध में प्रवीण होते हैं वे शत्रु को संघर्ष स्थल पर ले आते हैं। सु–न्जू के अनुसार, शत्रु की सेना पर उस समय आक्रमण करना चाहिए जब वह थकी हुई हो या भूखी हो या आराम कर रही हो। यह आक्रमण वहां हो जहां पर शत्रु की सुरक्षात्मक व्यवस्था ना की हो।

सु–न्जू कहते हैं कि सेनाध्यक्ष को शत्रु की योजनाओं का अनुमान लगाना आना चाहिए, उसे यह भी ज्ञात होना चाहिए कि कौन स्त्रतेजिक परिस्थितियाँ सफल होंगी और कौन सी नहीं। उसे पता होना चाहिए कि शत्रु कहां कमजोर है कहां मजबूत।

सु–न्जू ने सेनाओं की तुलना जल से की है कि जिस तरह बहता हुआ जल ऊंचे स्थानों को दूर किनारे कर निम्न भूमि पर रुक जाता है। उसी तरह सेनाओ को शत्रु की मजबूती से बचना चाहिए और उसकी कमजोरियों पर हमला करना चाहिए, जिस तरह जल भू–क्षेत्र की आकृति के अनुरूप ग्रहण कर लेता है उसी तरह सेनाओं को अपनी विजय हेतु शत्रु की परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को ढालना चाहिए।

युक्ति चालन (Maneuvring) :–

सु–न्जू कहते हैं कि युद्ध में सेनाध्यक्ष स्वयंभू (सम्प्रभु या राजा) से कमान प्राप्त होती है। इसके पश्चात उसे सैनिकों को इकट्‌ठा करना चाहिए फिर उसे समान रूप से भागों में बांटकर शिविरों में भेजना चाहिए।

युक्ति चालन के संदर्भ में कठिनाई यह है कि कैसे भटकने वाले मार्गों को सीधे मार्ग में बदला जाए। और दुर्भाग्य से लाभ बढ़ाया जाए।

युद्ध छल–कपट पर आधारित होता है। एक सेना को केवल तभी आगे बढ़ना चाहिए जब उसके लिए लाभदायक परिस्थितियां हो किंतु यदि परिस्थितियां लाभदायक नहीं है तो उसे सैन्य वलों के छितराव और संक्रेद्रण के द्वारा परिस्थितियों में परिवर्तन करने के प्रयास करना चाहिए।[5] सु–न्जू के अनुसार लंबे अभियानों के दौरान सेनाओं को वायुवेग के समान तीव्रता और तत्परता दिखानी चाहिए (कुछ हद तक इसे Blitzkrieg की तरह समझना चाहिए) मार्च के दौरान वनों की भांति वैभवशाली होना चाहिए, छापा डालने और लूट करने के दौरान उन्हें आग की तरह होना चाहिए। मार्गों पर तैनाती के दौरान उन्हें पर्वतों की तरह दिखना चाहिए।

रणनीति (सामरिकी) में विभिन्नता :–

युद्ध में सेनाध्यक्ष, सम्प्रभु के कमान निर्देश प्राप्त करता है। उसके पश्चात सैनिकों को इकट्‌ठा करता है और उन्हें तैनात करता है जब आप कठिन देश में हो कभी पड़ाव न डालो, राजमार्गों से जुड़े देश में मित्रों से हाथ मिलाओ खतरनाक एकांत स्थानों पर रुके नहीं, घिरती हुई स्थिति में चकमा देकर बचें। निराशाजनक परिस्थितियों में अपने को आशावान बनाएं सेनानायक जो युक्ति की विविधता के फायदे को जानता है उसे पता होता है कि कैसे अपने सैन्य दल पर नियंत्रण रखा जाए और जो सेनानायक इसे नहीं समझता वह अपने ज्ञान का व्यावहारिक उपयोग सफलता पूर्वक नहीं कर सकेगा। युद्ध की कला हमें यह सिखाती है हम इस पर विश्वास न करें कि शत्रु नहीं आएगा बल्कि हमारी तैयारी ऐसी हो कि हम उसका सामना कर सके। हमें इस आशा में ना रहे कि हम पर आक्रमण नहीं करेगा बल्कि हम ऐसी स्थिति बनाएं कि दुश्मन हम पर आक्रमण न कर सके।

भू–आकृति :–

सु–न्जू के अनुसार भूपटल की प्रकृति की संघर्ष में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है अतः सेनाध्यक्ष को शत्रु की स्थितियों, उसकी अपने सैनिकों से दूरी वहां तक पहुंचने में आने वाली कठिनाई को भली भांति मूल्यांकन कर लेना चाहिए।[6]

सु–न्जू ने छः प्रकार की भूमि का उल्लेख किया है।

1. **सुलभ जमीन–** ऐसी भूमि जहां दोनों पक्ष (युद्ध लड़ने वाले) समान रूप से आसानी से पहुंच सके।
2. **विषम भूमि :–** ऐसी भूमि जहां से हटा तो जा सकता है। परंतु पुनः अधिकार करना कठिन होता है।
3. **लाभदायक भूमि :–** जिसमे किसी पक्ष को लाभ ना हो।
4. **तंग दर्रे :–** ऐसे स्थानों पर अधिकार कर लेना के बाद और शत्रु के आने की प्रतीक्षा करनी चाहिए।
5. **खतरनाक ऊंची चोटियां :–** ऐसे क्षेत्रों की उठी हुई भूमि पर अधिकार कर शत्रु की प्रतीक्षा करनी चाहिए परंतु यदि शत्रु ने पहले से ही इन पर अधिकार कर लिया हो तो उससे बचने के पूरे उपाय किए जाने चाहिए।
6. **दूरस्थ भूमि :–** यदि एक पक्ष का मोर्चा शत्रु से बहुत दूर हो तो तथा दूसरे पक्ष की सैनिक शक्ति भी लगभग समान हो तो युद्ध के लिए पहल नहीं करनी चाहिए क्योंकि यह लाभदायक नहीं होता।

नौ प्रकार के संग्रह स्थल :–

सु–न्जू ने अपनी पुस्तक में नौ प्रकार के संग्राम स्थल का वर्णन किया है।[7]

1. **फैली हुई भूमि :–** जब एक सामंती योद्धा अपने ही क्षेत्र में युद्ध करता है तो यह फैली हुई भूमि होती है। ऐसी भूमि पर युद्ध नहीं लड़ना चाहिए।
2. **सुगम भूमि :–** जब कोई सेना शत्रु की सीमा में प्रवेश करती है तो आस–पास की भूमि सुगम भूमि कहलाती है। ऐसी भूमि पर नहीं रुकना चाहिए।
3. **विवादास्पद भूमि :–** ऐसी भूमि जिस पर कब्जा करके दोनों पक्षों के लिए लाभदायक होता है। ऐसी भूमि पर जो कब्जा करता है उस पर आक्रमण नहीं करना चाहिए।
4. **खुली भूमि :–** जिस भूमि पर प्रत्येक पक्ष की आवाजाही की स्वततंत्रा हो ऐसी भूमि पर शत्रु का मार्ग नहीं रोकना चाहिए।

5. **राजमार्गों को काटने वाली भूमि :–** मैदान जो की तीन संलग्न राज्यों की कुंजी का प्रारूप बनता हो जो पहले उसका अधिवास कर ले उसके नियंत्रण में साम्राज्य का अधिकांश नियंत्रण आ जाए ऐसी भूमि पर संग्राम हेतु पड़ोसियों के साथ गठबंधन बनाने तथा इसे मजबूत बनाने का प्रयास करना चाहिए।

6. **खतरनाक भूमि :–** जब कोई सेना अपने शत्रु राज्य के भूक्षेत्र में काफी अंदर तक प्रवेश कर जाती है और अपने पीछे शत्रु के अनेक शहरों और कस्बों को पीछे छोड़ती जाती है। इस भूमि को खतरनाक भूमि कहा जाता है ऐसी भूमि पर आगे के संघर्ष हेतु तैयारी व सेनाओं के प्रबंधन की योजना सदैव तैयार रखनी चाहिए।

7. **दुर्गम भूमि :–** पर्वतों, वनों, दलदलो, ऊबड़–खाबड़ घुमावदार मार्गों की भूमि दुर्गम भूमि कहलाती है। ऐसी भूमि पर सड़कों पर अधिकार कर सेना को आगे बढ़ाया जाना चाहिए।

8. **घिरा हुआ मैदान :–** ऐसी भूमि जहां पहुंचने के संकरे मार्ग हो और बाहर निकलने का रास्ता टेढे–मेढे हो उसे संकेद्रित (घिरी हुई भूमि) कहते हैं। – ऐसी भूमि पर शत्रु की एक छोटी सी सेना, एक बड़ी सेना पर हमला कर आसानी से उलझा सकती है ऐसी भूमि पर अपने आगे वाले अवरोधों को हटाने पर ध्यान देना चाहिए।

9. **मृत्युकारी भूमि :–** ऐसी भूमि जहां पर सेनाओं के जीवित रहने की संभावना उसके साहस के साथ लड़ने पर निर्भर करती है। ऐसी भूमि को मृत्युकारी भूमि होती है। – ऐसी भूमि पर सिर्फ संघर्ष करने पर ध्यान देना चाहिए क्योंकि यहां पर लड़ाई करने पर सैनिकों के जीवित बचने की सभावना शून्य होती है।

आग से आक्रमण :–

आग से आक्रमण करने के पाँच तरीके हैं।

– पहला शत्रु सैनिकों को पडाव में ही मारना

– दूसरा भंडारों को जला देना

– तीसरा सामान ढोने के साधनों को जला देना

– चौथा शस्त्रागार और हथियारों को नष्ट कर देना

– पांचवा शत्रु पर आग से हमला करना

इन आक्रमणों के लिए आग लगाने की सामग्री सदैव तैयार रखनी चाहिए और आग से हमला करने के साधन उपलब्ध होने चाहिए।

इसके लिए सु–न्जू ने उचित मौसम और समय का उल्लेख किया है। मौसम शुष्क हो और चंद्रमा ढका हो।

गुप्तचरों का उपयोग :–

सु–न्जू ने अपनी पुस्तक में अंतिम अध्याय में पांच प्रकार के गुप्तचरों का उल्लेख किया है।

1. स्थानीय गुप्तचर
2. अन्तस्थ गुप्तचर
3. परिवर्तित गुप्तचर
4. खर्चीली गुप्तचर
5. शत्रु के चंगुल से बचकर आने वाले गुप्तचर

जब यह पांचो प्रकार के गुप्तचर साथ–साथ क्रियाशील रहते हैं और इनमें से कोई एक दूसरे के कार्य और लक्ष्यों को नहीं जानता तो सु–न्जू के अनुसार ये राजा के लिए ''ईश्वरीय वरदान रूप में होते हैं''। सु–जू के अनुसार गुप्तचर युद्ध के लिए महत्वपूर्ण तत्व हैं क्योंकि इन्हीं पर सेना की गतिविधि, कार्यक्षमता और सफलता निर्भर करती है। चाहे लक्ष्य शत्रु सेना को नष्ट करने का हो, शहर पर हमला करने का हो, सेना के जनदल की हत्या करना हो इसके लिए सदैव आवश्यक है कि शत्रु को कैम्प, सहायक ठिकानों, द्वारा पालकों की, और सेना के संतरियों की जानकारी हो इन सबके लिए हमारे गुप्तचर यहां जांच कर पता लगाने में सक्षम होने चाहिए।[8]

समीक्षा :–

चीन के दार्शनिक एवं सैन्य विचारक जर्नल सु–न्जू का नाम उसी आदर के साथ लिया जाता है जैसे कि भारत में कौटिल्य (चाणक्य) का नाम और इटली के मैकियावेली का। हजारों साल पुरानी होने के बाद सु–न्जू की युद्ध से सम्बंधित नीतियां आज भी उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी उरा समय थी।

''दी आर्ट ऑफ वार'' पुस्तक सूंन्तजू के विचारों पर मुख्य स्त्रोत थी।

द्वितीय विश्व युद्ध में जापानी सेना का नेतृत्व कर रहे जनरल नोगी व एडमिरल तोजो सु जू की पुस्तक से प्रभावित थे। और उन्होंने सु–न्जू के सुझावों का विविध मोर्चे पर प्रयोग किया था। बाद में फ्रांस,

जर्मनी, रूस व अमेरिका में भी सु—न्जू की पुस्तक का अनुवाद हुआ और इसके विचार इस तरह इन देशों के भी सैन्य प्रतिष्ठान में फैल गए। सु—न्जू की नीतियां आग न केवल युद्ध तक सीमित नहीं है बल्कि व्यवसायों, खेल और राजनीति में भी लागू की जाने लगी है।

संदर्भ :—

1. Sun-Tzu, The Art of War, P. 42-43
2.. पाण्डेय, रामसूरत, स्त्रातेजिक विचारक, प्रकाश बुक डिपो बरेली, 2000, पृ0 282—283
3. Huang, J.H. Sun-tzu : The New translation, New York, Quill, 1993
4. Griffith, Samuel B, The Art of war, Oxford University Press, London, 1963, P. 139
5. E.M. Earl, Maker of Modern Strategy : Military thought Machiavelli to Hitlar, Princton University Press, 1948
6. अधिकारी, शेखर, आधुनिक स्त्रातेजिक चिंतन, एस0पी0 पब्लिकेशन इलाहाबाद 2007, पृ0 357
7. अधिकारी, शेखर, आधुनिक स्त्रातेजिक चिंतन, एस0पी0 पब्लिकेशन इलाहाबाद 2007, पृ0 359
8. पाण्डेय, रामसूरत : स्त्रातेजिक विचारक, प्रकाश डिपो बरेली, 2000, पृ0 286—287